



Renaissance University, Indore
School of Computer Science

हिंदी UNIT-2

आ

ऊ

घ

ङ

ए





RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

- हिंदी अखबार की सहायता से हिंदी की शब्द संपादकीय की खोजकर १५ नए शब्द लिखिए,
- बीज शब्द धर्म
- अदुवेत भाषा अवधारणा,
- उदारीकरण
- वैचारिक भारतीय भाषाओं में राम आचार्य रामचंद्र शुक्ल
- परिचय पाठ: उत्साह (भाव मूलक निबंध) रामधारी सिंह दिनकर



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

हिंदी अखबार की सहायता से हिंदी की शब्द संपादकीय की खोजकर १५

नए शब्द लिखिए

हिंदी अखबार में संपादकीय पृष्ठ पर नए शब्दों की खोज करके, आप विभिन्न विषयों और मुद्दों से संबंधित 15 नए शब्द खोज सकते हैं। यहां कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

1. **अंतर्राष्ट्रीय:** यह शब्द वैश्विक घटनाओं, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और अन्य देशों से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।
2. **राजनीतिक:** यह शब्द सरकार, नीति और राजनीतिक प्रक्रियाओं से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।
3. **आर्थिक:** यह शब्द धन, बाजार और वित्तीय मुद्दों से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।
4. **सामाजिक:** यह शब्द समाज, संस्कृति और लोगों के बीच संबंधों से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।
5. **पर्यावरण:** यह शब्द प्रकृति, पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।
6. **वैज्ञानिक:** यह शब्द विज्ञान, खोज और तकनीकी प्रगति से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।
7. **स्वास्थ्य:** यह शब्द चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवा और बीमारी से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।
8. **शिक्षा:** यह शब्द शिक्षा, स्कूल और सीखने से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।
9. **सांस्कृतिक:**
यह शब्द कला, संगीत और अन्य सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।
10. **खेल:** यह शब्द खेल, प्रतियोगिता और खेल से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।
11. **लोकतंत्र:** यह शब्द सरकार और चुनाव के प्रकार से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

12. **प्रगतिशील:** यह शब्द आगे बढ़ने, सुधार करने और बदलाव लाने से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।
13. **लोककल्याण:** यह शब्द जनता के कल्याण, विकास और भलाई से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।
14. **जागरूकता:** यह शब्द किसी मुद्दे या समस्या के बारे में जागरूकता, जानकारी और ज्ञान से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।
15. **संवर्ध:** यह शब्द विकास, वृद्धि और सुधार से संबंधित जानकारी को संदर्भित करता है।



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

बीज शब्द धर्म

"बीज शब्द" (Beej Shabd) का अर्थ है "मूल शब्द" या "आधारभूत शब्द"। यह एक ऐसा शब्द है जो किसी विशेष अवधारणा या सिद्धांत की जड़ या सार को दर्शाता है। धर्म के संदर्भ में, "बीज शब्द" का अर्थ है धर्म का मूल सिद्धांत या वह केंद्रीय विचार जिससे धर्म के अन्य पहलू निकलते हैं।

अधिक विस्तार से, "बीज शब्द" का अर्थ है:

- **मूल या आधार:**

यह किसी भी चीज का मूल, शुरुआती बिंदु या आधार होता है।

- **सार:**

यह किसी चीज का सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक हिस्सा होता है, जो उसके अर्थ को दर्शाता है।

- **सिद्धांत:**

यह किसी विशेष विचारधारा या प्रणाली का मूल सिद्धांत या नियम होता है। धर्म के संदर्भ में, "बीज शब्द" का अर्थ है धर्म का मूल सिद्धांत, जो उसके सभी पहलुओं को समाहित करता है और जिससे धर्म के अन्य विचार और प्रथाएं निकलती हैं। उदाहरण के लिए, हिंदू धर्म में, "बीज शब्द" "कर्म" हो सकता है, क्योंकि कर्म का सिद्धांत हिंदू धर्म के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है।



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

अद्वैत भाषा अवधारणा

अद्वैत भाषा अवधारणा, दर्शनशास्त्र में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो "एकता" या "गैर-द्वैतवाद" पर जोर देती है। यह इस विचार को संदर्भित करता है कि सभी चीजें एक ही मौलिक वास्तविकता, जिसे ब्रह्म कहा जाता है, से जुड़ी हुई हैं। अद्वैत, जिसका शाब्दिक अर्थ "दो नहीं" है, यह सिखाता है कि व्यक्तिगत आत्मा (आत्मा) और ब्रह्मांड (ब्रह्म) के बीच का कथित अंतर एक भ्रम है।

अद्वैत भाषा अवधारणा को समझने के लिए, निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करें:

- **एकता:**

अद्वैत दर्शन का मुख्य सिद्धांत यह है कि सब कुछ एक है।

- **गैर-द्वैतवाद:**

यह द्वैतवाद के विपरीत है, जो दो अलग-अलग वास्तविकताओं, जैसे कि आत्मा और पदार्थ, या ईश्वर और दुनिया के बीच अंतर करता है।

- **ब्रह्म:**

अद्वैत में, ब्रह्म वह अंतिम वास्तविकता है, जो सभी चीजों का स्रोत और सार है।

- **आत्मा:**

अद्वैत के अनुसार, व्यक्तिगत आत्मा (आत्मा) वास्तव में ब्रह्म का ही एक पहलू है।

- **भ्रम (माया):**

अद्वैत मानता है कि हम जिस दुनिया को देखते हैं, वह माया (भ्रम) के कारण अलग-अलग और अलग-अलग दिखाई देती है।

- **मोक्ष:**

अद्वैत दर्शन का लक्ष्य मोक्ष (मुक्ति) प्राप्त करना है, जो ब्रह्म के साथ अपनी एकता की प्राप्ति है।



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

संक्षेप में, अद्वैत भाषा अवधारणा यह सिखाती है कि हम सभी एक ही परम वास्तविकता का हिस्सा हैं, और हमारी व्यक्तिगत पहचान एक भ्रम है। इस भ्रम को दूर करके, हम मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

अद्वैत वेदांत, हिंदू दर्शन का एक प्रमुख स्कूल है, जो अद्वैत अवधारणा पर आधारित है। आदि शंकराचार्य अद्वैत वेदांत के प्रमुख प्रतिपादक थे।



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

उदारीकरण

उदारीकरण का अर्थ है, सरकारी नियंत्रण और प्रतिबंधों में ढील देना या उन्हें हटाना, जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिले। इसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक गतिविधियों, व्यापार और व्यावसायिक परिचालनों पर लगे अनावश्यक सरकारी नियमों को कम करना है। उदारीकरण में वे सभी उपाय शामिल हैं जिनके द्वारा किसी देश के आर्थिक विकास में बाधा डालने वाली आर्थिक नीतियों, नियमों, प्रशासनिक नियंत्रणों, प्रक्रियाओं आदि को समाप्त किया जाता है या उनमें ढील दी जाती है।

उदारीकरण के मुख्य पहलू:

- **सरकारी हस्तक्षेप में कमी:**

उदारीकरण का मतलब है सरकार द्वारा अपनी आर्थिक नीतियों पर लगाए गए प्रतिबंधों को कम करना।

- **बाजार को मुक्त करना:**

उदारीकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू बाजार को मुक्त करना है, यानी आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित करने वाले नियमों को कम करना।

- **निजीकरण:**

उदारीकरण में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का निजीकरण भी शामिल हो सकता है।

- **विदेशी निवेश को बढ़ावा:**

उदारीकरण से विदेशी निवेश आकर्षित होता है, जिससे आर्थिक विकास को गति मिलती है।

- **प्रतिस्पर्धा में वृद्धि:**

उदारीकरण से प्रतिस्पर्धा बढ़ती है, जिससे उपभोक्ताओं को बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पाद और सेवाएं कम कीमतों पर उपलब्ध होती हैं।

- **आर्थिक विकास:**



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

उदारीकरण का मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है।

उदारीकरण के उदाहरण:

- **व्यापार उदारीकरण:**

यह आयात और निर्यात पर लगाए गए शुल्कों और कोटा को कम करने या हटाने को संदर्भित करता है।

- **वित्तीय उदारीकरण:**

यह वित्तीय क्षेत्र में सरकारी नियंत्रण को कम करने और निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ाने को संदर्भित करता है।

- **औद्योगिक उदारीकरण:**

यह औद्योगिक क्षेत्र में सरकारी नियमों को कम करने और निजी क्षेत्र को अधिक स्वतंत्रता देने को संदर्भित करता है।

संक्षेप में, उदारीकरण आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों और नियमों में ढील देने या उन्हें हटाने की प्रक्रिया है।



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

वैचारिक भारतीय भाषाओं में राम आचार्य रामचंद्र शुक्ल

भारतीय भाषाओं में राम

भूमिका-

सीया राममय सब जुग जानी।

करडं प्रणाम जोरि जुग पानी ।

रामचरित मानस में उल्लेखित इस पद के माध्यम से गोस्वामी तुलसीदासजी सम्पूर्ण संसार को यह संदेश देते हैं कि यह पूरा संसार सीता-राम का ही स्वरूप मात्र है। अर्थात् सब में भगवान का वास है। अतः हाथ जोड़कर उस परमसत्ता को प्रणाम करना चाहिए ।

इस संसार में ऐसे अनेक संत-भक्त हुए हैं, जिन्होंने ईश्वर की अनुभूति की है और वे स्वयं ईश्वरमय हो गए। वाल्मीकि रामायण में कहा गया है- “रामो विग्रहवान धर्मः ।” अर्थात् राम धर्म के मूर्त स्वरूप हैं। लक्ष्मण सुरि ने अपनी रचना 'पौलस्त्य वध' में भगवान श्रीराम का वर्णन करते हुए कहा है, 'हाथ में दान, पैरों से तीर्थ यात्रा, भुजाओं में विजयश्री, ... वचन में सत्यता, प्रसाद में लक्ष्मी, संघर्ष में शत्रु की स्वाभाविक मृत्यु ये राम के स्वाभाविक गुण हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपनी पुस्तक “गोस्वामी तुलसीदास” में कहते हैं कि, “राम के बिना हिन्दू जीवन नीरस है- फीका हैं।” भगवान श्रीराम भारतीय जनमानस के आराध्य देव हैं। भारत की प्रत्येक जाति और धर्म की जनता भगवान राम को पूजती है, उनकी महिमा को स्वीकारती है। हिन्दू धर्म के लोगों की आस्था का प्रतीक राम ही है, इसलिए ऐसा कोई घर नहीं होगा, जहाँ भगवान राम के जीवन दर्शन, व्यक्तित्व व महिमा से जुड़ा कोई भी धार्मिक अंथ या साहित्य उपलब्ध न हो । क्योंकि भारत की प्रत्येक भाषा में रामकथा पर आधारित साहित्य प्रचुर संख्या में हैं।

वास्तव में राम भारतीय मन की श्रेष्ठ भावना व कृति है। वाल्मीकि ने जब “रामायण” जैसे महाग्रंथ को रचना की तो वह क्रौंच के वियोग और दुःख से द्रवित होकर अन्याय का प्रतिरोध था । लेकिन तुलसी ने कठिन दौर व विषय परिस्थितियों के बीच राम को मातृभाषा की धमनी में ढालकर रामचरितमानस के रूप में सभी के सम्मुख प्रस्तुत किया। पुरुषार्थ के साथ भविष्यदृष्टा के गहरे रहस्यों के बीच राम साहित्य में, जीवन में, विश्व में भारतवर्ष की भाषा बन गये । राम की कीर्ति व छवि अनेक देशों के साथ-साथ अनेक भाषाओं को भी पार करती चली गयी।

साहित्यिक उत्कृष्टता और राम के उच्च गुणों के समावेश के चलते राम से सम्बन्धित साहित्य की अपार रचनाएँ सफलता के आयामों को छूती चली गईं। 'राम' पर जितना साहित्य सृजन हुआ, उतना शायद ही किसी अन्य विषय पर हुआ हो। शंकर देव ने 'राम' पर अपनी प्रथम कविता लिखी तो केशवदास की 'रामचन्द्रिका' भाषा सौष्ठव व अलंकारों से सुसज्जित है। मैथिलीशरण गुप्त



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

की रचना 'साकेत' में सहज लौकिकीकरण मिलता है। प्रतिमा नाटक, भावार्थ रामायण, महावीर चरित, दशरथ जातक, वैदेही विलास, आनंद रामायण, पठम चरिठ आदि राम पर आधारित कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं। इसके अलावा चीन, इंडोनेशिया, मलेशिया, जापान, थाईलैंड, नेपाल, श्रीलंका आदि देशों में भी राम पर विविध रचनाएँ रूपी साहित्य उपलब्ध हैं, जो जनमास को परिष्कृत कर रहा है।

आधुनिक समय में सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की "राम की शक्ति पूजा" अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रचना है। समकालीन साहित्यकारों ने राम को केन्द्र में रखकर साहित्य सृजन किया है। राम पर लोक साहित्य, लोक कला, संगीत व लोक मंच की भी अनेक रचनाएँ हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि राम एक ऐसा अनुभव हैं, जो समस्याओं व कठिनाइयों से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हुए द्वेष, अहंकार और कुसंस्कारों को तिरोहित करता है।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न १. वैश्विक परिदृश्य में राम साहित्य पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर- मर्यादा पुरुषोत्तम राम भारतीय जनमानस के अंतः में विराजित शील, सौन्दर्य और राक्ति की प्रतिमूर्ति हैं। राम भारतीय संस्कृति और सभ्यता की गौरवमयी आस्था के प्रतीक हैं। भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में राम भक्ति काव्य परम्परा का मूल श्रृंखला "वाल्मीकि रामायण" है। महाभारत के भी अनेक प्रसंगों व स्थलों पर रामकथा का वर्णन मिलता है। संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश महाकाव्यों एवं नाटकों में भी राम काव्य की सुदृढ़ परम्परा मिलती है। वेदों, पुराणों व उपनिषदों में भी राम कथा के तत्त्वों का वर्णन किया गया है।

हिन्दी के साथ-साथ आधुनिक भारतीय भाषाओं में भी राम काव्य का 'विपुल साहित्य उपलब्ध' हैं। बांग्ला में कृतिवास कृत "रामायण", अनन्त कृत "अनन्त रामायण", तमिल में महाकवि कम्ब की "कम्ब रामायण" तेलुगू की 'रंग रामायण' मलयालम में 'इराम चरित', कन्नड़ में 'तोरबे रामायण' मराठी में संत एकनाथ कृत "भास्कर रामायण" असमिया में शंकरदेव कृत "उत्तरकाण्ड" एवं "श्रीराम विजय नाटक", उड़िया में "जगन्न मोहन रामायण" आदि अनेक महाकाव्य मिलते हैं।

उत्तर भारत में रामभक्ति के प्रवर्तन का मुख्य श्रेय आचार्य रामानन्द को प्राप्त है। तुलसीदास, नाभादास, केशवदास, लालदास, ईश्वरदास, अग्रदास जैसे विद्वानों ने भी इस "परम्परा को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया है। हिन्दी में रामचरित मानस रामभक्ति काव्यधारा की सबसे प्रौढ़ रचना है। तुलसी कृत 'रामचरितमानस' हिन्दी साहित्य का उत्कृष्ट महाकाव्य है। रीतिकालीन तथा आधुनिक काल में भी रामकाव्यों की रचना विपुल मात्रा में हुई। काव्य के अतिरिक्त कथा साहित्य में आधुनिक युग में राम



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

कथा नए चिन्तन एवं आयामों के साथ आज भी जनमानस में आदर्श जीवन मूल्यों की संवाहक बनी हुई है।

प्रश्न 2. राम विश्व चेतना के आधार हैं। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- राम न केवल भारत के अपितु विश्व की चेतना के आधार हैं। विश्व इतिहास और विश्व साहित्य में भी राम और रामकथा बहुप्राचीन एवं बहुप्रचलित है। इंडोनेशिया में 'काकविन रामायण', म्यांमार में 'रामवस्तु', 'राम-ताज्या', 'थिरी राम', फिलीपीन्स में "महारादिया लावना" मलेशिया में 'मलय रामायण', लाओस में 'फालम' और "पोम्पचाक" तथा मंगोलिया में राम ग्रंथ मिलते हैं। इन सभी देशों में लगभग सौ वर्ष पहले आर्य संस्कृति तथा राम कथा पहुँच चुकी थी! रामकथा की वैश्विक सत्ता अद्वितीय है। यह वैश्विक जनमानस के पटल पर अंकित है। रामकथा व राम भारतीय संस्कृति की चेतना के प्राण तत्व हैं।

भगवान राम साधन नहीं साध्य हैं! वर्तमान परिवेश में राम नाम का आधार ही सम्पूर्ण मानव जाति की खोई हुई शुद्धा, मूल्य, आस्था को वापस लाकर मानवता का उद्धार कर सकता है। भारतीय लोकजीवन में तो राम नाम की महिमा व महत्व सदियों से विद्यमान रहा हैं। सत्य के मार्ग पर चलते हैं। अपने जीवन में अनुशासन और धैर्य को धारण करना हमें राम ने ही सिखाया है।

लघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 3. बौद्ध परम्परा में श्रीराम से सम्बन्धित कितनी जातक कथाएँ हैं?

उत्तर- बौद्ध परम्परा में श्रीराम से सम्बन्धित दशरथ जातक, अनामक जातक तथा दशरथ 'कथानक नामक तीन जातक कथाएँ उपलब्ध हैं। रामायण से थोड़ा भिन्न होते हुए भी ये ग्रंथ अपनी साहित्यिक उत्कृष्टता के चलते इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में से हैं।

प्रश्न 4. जैन साहित्य में राम कथा सम्बन्धी कौन-कौनसे ग्रंथ लिखे गये ?

उत्तर- जैन साहित्य में राम कथा से सम्बन्धित कई ग्रंथ लिखे गए, जिनमें मुख्य हैं- विमलसूरि कृत पद्मचरियं (प्राकृत) , आचार्य रविषेण कृत (पद्मपुराण) (संस्कृत) , स्वयंभू -... कृत पद्मचरित (अपभ्रंश) रामचंद्र चरित्र पुराण तथा गुणश्रद्ध कृत उत्तर पुराण (संस्कृत) । जैन परम्परा के अनुसार राम का मूल नाम पद्म था।

प्रश्न 5. राम कथा कौनसी भारतीय भाषाओं में लिखी गई ? स्पष्ट कीजिए।



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

उत्तर- रामकथा अनेक भारतीय भाषाओं में भी लिखी गई। हिन्दी में कम से कम 11, मराठी में 8, बांग्ला में 25, तमिल में 12, तेलुगू में 12 तथा उड़िया भाषा में 6 रामायणें मिलती हैं। हिन्दी भाषा में लिखित गोस्वामी तुलसीदांस कृत रामचरित मानस ने उत्तर भारत में विशेष स्थान पाया।

प्रश्न 6. शत भाषा में रामकथा आधारित रचे गए महाकाव्यों की जानकारी दीजिये ।

उत्तर- भारत में स्वातंत्र्योत्तर काल में संस्कृत में रामकथा पर आधारित अनेक महाकाव्य काला गए हैं, उनमें रामकीर्ति, जानकीजीवनम् उर्मिलीयम्, 'लघुकुलकथावल्ली, सीतास्वय, रामरसायण, सीताचरितम्, सीतारामीयम्, साकेतसौरभम् आदि प्रमुख हैं।

प्रश्न 7. वाल्मीकि कृत रामायण का संक्षिप्त परिचय दीजिए ।

उत्तर- भिन्न- भिन्न प्रकार से गणना करने पर तीन सौ से लेकर एक हजार तक की संख्या में विविध रूपों मेरामायण लिलती है । इनमें से संस्कृत में रचित वाल्मीकि रामायण सबसे प्राचीन मानी जाती है साहित्यिक शोध क्व रोप में भगवन श्री राम के बारे में अधिक से अधिक जानने का मूल स्रोत महर्षि वाल्मीकि दुआर रचित रामायण है । इसके कारण वाल्मीकि दुनिया के आदि कवि माने जाते हैं।



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

परिचय पाठ: उत्साह (भाव मूलक निबंध) रामधारी सिंह दिनकर

दुख के वर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनंद वर्ग में उत्साह का है। भय में हम प्रस्तुत कठिन स्थिति के नियम से विशेष रूप में दुःखी और कभी कभी उस स्थिति से अपने को दूर रखने के लिए प्रयत्नवान् भी होते हैं। उत्साह में हम आनेवाली कठिन स्थिति के भीतर साहस के अवसर के निश्चय द्वारा प्रस्तुत कर्म सुखकीउमंग से अवश्य प्रयत्न वां होते हैं। उत्साह में कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ साथ कर्म में प्रवृत्त होने के आनंद का योग रहता है। साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम उत्साह है। कर्म सौंदर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं।

जिन कर्मों में किसी प्रकार का कष्ट या हानि सहने का साहस अपेक्षित होता है उन सबके प्रति उत्कंठापूर्ण आनंद उत्सव के अंतर्गत लिया जाता है। कष्ट या हानि के भेद के अनुसार उत्साह के भी भेद हो जाते हैं। साहित्य मीमांसकों ने इसी दृष्टि से युद्धवीर, दानवीर, दयावीर इत्यादि भेद किए हैं। इनमें सबसे प्राचीन और प्रधान युद्ध वीरता है, जिसमें आयात, पीड़ा क्या, मृत्यु तक की परवा नहीं रहती। इस प्रकार की वीरता का तक की परवा नहीं रहती। इस प्रकार की वीरता का प्रयोजन अत्यंत प्राचीन काल से पड़ता चला आ रहा है, जिसमें साहस और प्रयत्न दोनों चरम उत्कर्ष पर पहुँचते हैं। पर केवल कष्ट या पीड़ा सहन करने के साहस में ही उत्साह का स्वरूप स्फुरित नहीं होता। उसके साथ आनंदपूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कंठा का योग चाहिए। बिना बेहोश हुए भारी फोड़ा चिराने को तैयार होना साहस कहा जाएगा, पर उत्साह नहीं। इसी प्रकार चुपचाप, बिना हाथ पैर हिलाए, घोर प्रहार सहने के लिए तैयार रहना साहस और कठिन से कठिन प्रहार सहकर भी जगह से न हटना धीरता कही जाएगी। ऐसे साहस और धीरता को उत्साह के अंतर्गत तभी ले सकते हैं जब कि साहसी या धीर उस काम को आनंद के साथ करता चला जाए, जिसके कारण उसे इतने प्रहार सहने पड़ते हैं। सारांश यह कि पूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कंठा में ही उत्साह का दर्शन होता है, केवल कष्ट सहने के निश्चेष्ट साहस में नहीं। धाति और साहस दोनों का उत्साह के बीच संचार होता है।

जानवर में अर्थ त्याग का साहस अर्थात् उसके कारण होनेवाले कष्ट या कठिनता को सहने की क्षमता अंतर्हित रहती है। दानवीरता तभी कही जाएगी जब दान के कर्ण दानी को अपने जीवन निर्वाह में किसी प्रकार का कष्ट या कठिनता दिखाई देगी। इसी कष्ट या कठिनता की मात्रा या संभावना जितनी ही अधिक होगी, दानवीरता उतनी ही ऊँची समझी जाएगी। पर इस अर्थ त्याग के साहस के साथ ही जब तक पूर्ण तत्परता और आनंद के चिद् न दिखाई पड़ेंगे तब तक उत्साह का स्वरूप न खड़ा होगा।



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

युद्ध के अतिरिक्त संसार में और भी ऐसे विकट काम होते हैं जिनमें घोर शारीरिक कष्ट सहना पड़ता है और प्राण हानि तक की संभावना रहती है। अनुसंधान के लिए तुषार मंडित अभ्रभेदी अगम्य पर्वतों की चढ़ाई, धारुव देश या सहारा के रेगिस्तान का सफर, क्रूर, बर्बर जातियों के बीच अज्ञात घोर जंगलों में प्रवेश इत्यादि भी पूरी वीरता और पराक्रम के कर्म हैं। इनमें जिस आनंदपूर्ण तत्परता के साथ लोग प्रवृत्त हुए हैं वह भी उत्साह ही है।

मनुष्य शारीरिक कष्ट से ही पीछे हटनेवाला प्राणी नहीं है। मनसिक क्लेश की संभावना से भी बहुत से कर्मों की ओर प्रवृत्त होने का साहस उसे नहीं होता। जिन बातों से समाज के बीच उपहास, निंदा, अपमान इत्यादि का भय रहता है, उन्हें अच्छी और कल्याणकारी समझते हुए भी बहुत से लोग उनसे दूर रहते हैं। प्रत्यक्ष हानि देखते हुए भी कुछ प्रथाओं का अनुसरण बड़े बड़े समझदार तक इसलिए करते चलते हैं कि उनके त्याग से वे बुरे कहे जाएंगे, लोगों में उनका वैसा आदर सम्मान न रह जाएँगे, लोगों में उनका वैसा आदर सम्मान न रह जाएगा। उसके लिए मन ग्लानि का कष्ट सब शारीरिक क्लेशों से बढ़कर होता है। जो लोग मन अपमान का कुछ भी ध्यान न करके, निंदा स्तुति की कुछ भी परवा न करके किसी प्रचलित प्रथा के विरुद्धा पूर्ण तत्परता और प्रसन्नता के साथ कार्य करते जाते हैं वे एक ओर तो उत्साही और वीर कहलाते हैं दूसरी ओर भारी बेहया।

किसी शुभ परिणाम पर दृष्टि रखकर निंदा स्तुति, मन अपमान आदि की कुछ, परवा न करके प्रचलित प्रथाओं का उल्लंघन करनेवाले वीर या उत्साही कहलाते हैं, यह देखकर बहुत से लोग केवल इस विरुद्ध के लोभ में ही अपनी उछलकूद दिखाया करते हैं। वे केवल उत्साही या साहसी कहे जाने के लिए ही चली आती हुई प्रथाओं को तोड़ने की धुम मचाया करते हैं। शुभ या अशुभ परिणाम से उनसे कोई मतलब नहीं, उनकी ओर उनका ध्यान लेशमात्र नहीं रहता। जिस पक्ष के बीच की सुख्याति का वे अधिक महत्त्व समझते हैं उसकी वाहवाही से उत्पन्न आनंद की चाह में दूसरे पक्ष के बीच की निंदा या अपमान की कुछ परवा नहीं करते। ऐसे ओछे लोगों के साहस या उत्साह की अपेक्षा उन लोगों का उत्साह या साहस भाव की दृष्टि से कहीं अधिक मूल्यवान है जो किसी प्राचीन प्रथा की चाहे वह वास्तव में हानिकारिणी ही हो-उपयोगिता का सच्चा विश्वास रखते हुए प्रथा नोट नेताओं की निंदा गिलास वामन याटि सटा करनेतोड़नेवालों की निंदा, उपवास, अपमान आदि सहा करते हैं।

समाज सुधार के वर्तमान आंदोलनों के बीच जिस प्रकार सच्ची अनुभूति से प्रेरित उच्चाशय और गंभीर पुरुष पाए जाते हैं, उसी प्रकार कुछ मनोवृत्तियों द्वारा प्रेरित साहसी और दयावान भी बहुत मिलते हैं। मैंने कई छिछोरो और लंपटों को विधवाओं की दशा पर दया दिखाते हुए उनके पापाचार के लंबे चौड़े दास्तान हर दम सुनते सुनाते पाया है। ऐसे लोग वास्तव में काम कला के रूप में ऐसे वृत्तांतों का तन्मयता के साथ करण और श्रवण करते हैं। इस ढाँचे के लोगों से सुधार के कार्य में कुछ सहायता



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

पहुँचाने के स्थान पर बाधा पहुँचाने की ही संभावना रहती है। सुधार के नाम पर साहित्य के क्षेत्र में भी ऐसे लोग गंदगी फैलाते पाए जाते हैं।

उत्साह की गिनती अच्छे गुणों में होती है। किसी भाव के अच्छे या बुरे होने का निश्चय अधिकतर उसकी प्रवृत्ति के शुभ या अशुभ परिणाम के विचार से होता है। वहां उत्साह जो कर्तव्य कर्मों के प्रति इतना सुंदर दिखाई पड़ता है, अकर्तव्य कर्मों की ओर होने पर वैसा श्लाघ्य नहीं प्रतीत होता। आत्मरक्षा, पररक्षा, देशरक्षा आदि के निमित्त साहस की जो उमंग दिखाई देती है उसके सौंदर्य को परपीड़न, डकैती आदि कर्मों का साहस कभी नहीं पहुँच सकता। यह बात होते हुए भी विशुद्ध उत्साह या पहुँच सकता। यह बात होते हुए भी विशुद्ध उत्साह या साहस की प्रशंसा संसार में थोड़ी बहुत होती ही है। अत्याचारियों या डाकुओं के शौर्य और साहस की कथाएँ भी लोग तारीफ करते हुए सुनते हैं।

अब तक उत्साह का प्रधान रूप ही हमारे सामने रहा, जिसमें साहस का पूरा योग रहता है। पर कर्म मात्र के संपादन में जो तत्परतापूर्ण आनंद देखा जाता है वह उत्साह ही कहा जाता है। सब कार्यों में साहस उपेक्षित नहीं होता, पर थोड़ा बहुत आराम विश्राम, सुबीते आदि का त्याग सबको करना पड़ता है, और कुछ नहीं तो उठकर बैठना, खड़ा होना या दस पाँच कदम चलना ही पड़ता है। जब तक आनंद का लगाव किसी क्रिया, व्यापार या उसकी भावना के साथ नहीं दिखाई पड़ता तब तक उसे 'उत्साह' की संज्ञा प्राप्त नहीं होती। यदि किसी प्रिय मित्र के आने का समाचार पाकर हम चुपचाप ज्यों के ज्यों आनंदित होकर बैठे रह जाएँ या थोड़ा हँस भी दें तो यह हमारा उत्साह नहीं कहा जाएगा। हमारा उत्साह तभी कहा जाएगा जब हम अपने मित्र का आगमन सुनते ही उठ खड़े होंगे। उससे मिलने के लिए दौड़ पड़ेंगे और उसके ठहरने आदि के प्रबंध में प्रसन्न मुख इधर उधर आते जाते दिखाई देंगे। प्रयत्न और कर्म संकल्प उत्साह नामक आनंद के नित्य लक्षण हैं।

प्रत्येक कर्म में थोड़ा या बहुत बुद्धि का योग भी रहता है। प्रत्येक कर्म में थोड़ा या बहुत बुद्धि का योग भी रहता है। कुछ कर्मों में तो बुद्धि की तत्परता और शरीर की तत्परता दोनों बराबर साथ साथ चलती है। उत्साह की उमंग जिस प्रकार हाथ पैर चलवाती है, उसी प्रकार बुद्धि से भी काम कराती है। ऐसे उत्साहवाले वीर को कर्मवीर कहना चाहिए या बुद्धिवीर-यह प्रश्न मुद्राराक्षस नाटक बहुत अच्छी तरह हमारे सामने लाता है। चाणक्य और राक्षस के बीच जो चोटें चली हैं वे नीति की हैं-शस्त्र की नहीं। अतः विचार करने की बात यह है कि उत्साह की अभिव्यक्ति बुद्धि व्यापार के अवसर पर होती है अथवा बुद्धि द्वारा निश्चित उद्योग में तत्पर होने की दशा में। हमारे देखने में तो उद्योग की तत्परता में ही उत्साह की अभिव्यक्ति होती है, अतः कर्मवीर ही कहना ठीक है।



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

बुद्धि वीर के दृष्टांत कभी कभी हमारे पुराने ढंग के शास्त्रार्थों में देखने को मिल जाते हैं। जिस समय किसी भारी शास्त्रार्थी पंडित से भिड़ने के लिए कोई विद्यार्थी आनंद के साथ सभा में आगे आता है, उस समय उसके बुद्धि साहस की प्रशंसा अवश्य होती है। वह जीते या हारे, बुद्धि वीर समझा ही जाता है। इस जमाने में वीरता का प्रसंग उठाकर वाग्वीर का उल्लेख यदि न हो तो बात अधूरी ही समझी जाएगी। ये वाग्वीर आजकल बड़ी बड़ी सभाओं के मंचों पर से लेकर स्त्रियों के उठाए हुए पारिवारिक प्रपंचों तक में पाए जाते हैं और काफी टाटाट में।

थोड़ा यह भी देखना चाहिए कि उत्साह में ध्यान किस पर रहता है। कर्म पर, उसके फल पर अथवा व्यक्ति या वस्तु पर? हमारे विचार में उत्साही वीर का ध्यान आदि से अंत तक पूरी कर्म ऋखला पर से होता हुआ उसकी सफलतारूपी समाप्ति तक फैला रहता है। इसी ध्यान से जो आनंद की तरंगें उठती हैं वे ही सारे प्रयत्न को आनंदमय कर देती हैं। युद्ध वीर में विजेतव्य को आलंबन कहा गया है। उसका अभिप्राय यही है कि विजेतव्य कर्मप्रेरक के रूप में वीर के ध्यान में स्थिर रहता है, वह कर्मस्वरूप का भी निर्धारण करता है। पर आनंद और साहस के मिश्रित भाव का सीधा लगाव उसके साथ नहीं रहता। सच पूछिए तो वीर के उत्साह का विषय विजय विधायक कर्म या युद्ध ही रहता है। दानवीर और धर्मवीर पर विचार करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है। दान दयावश, श्रद्धावश या कीर्ति लोभवश दिया जाता है। यदि श्रद्धावश दान दिया जा रहा है तो दानपात्र वास्तव में श्रद्धा का और यदि दयावश दिया जा रहा है तो पीड़ित यथार्थ में दया का विषय या आलंबन ठहरता है। अतः उस श्रद्धा या दया की प्रेरणा से जिस कठिन या दुस्साध्य कर्मकी प्रवृत्ति होती है उसी की ओर उत्साही का साहसपूर्ण आनंद उन्मुख कहा जा सकता है। अभी और रसों में आलंबन का स्वरूप जैसा निर्दिष्ट रहता है वैसा वीर रस में नहीं। बात यह है कि उत्साह एक यौगिक भाव है जिसमें साहस और आनंद का मेल रहता है।

जिस व्यक्ति या वस्तु पर प्रभाव डालने के लिए वीरता दिखाई जाती है उसकी ओर उन्मुख कर्म होता है और कर्म की ओर उन्मुख उत्साह नामक भाव होता है। सारांश यह है कि किसी व्यक्ति या वस्तु के साथ उत्साह का सीधा लगाव नहीं होता। समुद्र लाँघने के लिए जिस उत्साह के साथ हनुमान उठे हैं उसका कारण समुद्र नहीं लाँघने का विकट कर्म है। कर्म भावना ही उत्साह उत्पन्न करती है, वस्तु या व्यक्ति की भावना नहीं।

किसी कर्म के संबंध में जहाँ आनंदपूर्ण तत्परता दिखाई पड़ी कि हम उसे उत्साह कह देते हैं। कर्म के अनुष्ठान में जो आनंद होता है उसका विधान तीन रूपों में दिखाई पड़ता है

1. कर्म भावना से उत्पन्न,
2. फल भावना से उत्पन्न, और



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

3. आगंतुक, अर्थात् विषयांतर से प्राप्त।

इसमें कर्म भावना प्रसूत आनंद को ही सच्चे वीरों का आनंद समझना चाहिए, जिसमें साहस का योग प्रायः

बहुत अधिक रहा करता है। सच्चा वीर जिस समय मैदान में उतरता है उसी समय उसमें उतना आनंद भरा मैदान में उतरता है उसी समय उसमें उतना आनंद भरा रहता है जितना औरों को विजय या सफलता प्राप्त करने पर होता है। उसके सामने कर्म और फल के बीच या तो कोई अंतर होता ही नहीं या बहुत सिमटा हुआ होता है। इसी से कर्म की ओर वह उसी झोंक से लपकता है जिस झोंक से साधारण लोग फल की ओर लपका करते हैं। इसी कर्मप्रवर्तक आनंद की मात्रा के हिसाब से शौर्य और साहस का स्फुरण होता है।

फल की भावना से उत्पन्न आनंद भी साधक कर्मों की ओर हर्ष और तत्परता के साथ प्रवृत्त करता है। पर फल का लोभ जहाँ प्रधान रहता है वहाँ कर्म विषयक आनंद उसी फल की भावना की तीव्रता और मंदता पर अवलंबित रहता है। उद्योग के प्रभाव के बीच जब जब फल की भावना मंद पड़ती है- उसकी आशा कुछ धुंधली पड़ जाती है, तब तब आनंद की उमंग गिर जाती है और उसी के साथ उद्योग में भी शिथिलता आ जाती है। पर कर्म भावना प्रधान उत्साह बराबर एकरस रहता है। फलासक्त उत्साही असफल होने पर खिन्न और दुःखी होता है, पर कर्मासक्त उत्साही केवल कर्म अनुष्ठान के पूर्व की अवस्था में हो जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि कर्म भावना प्रधान उत्साह ही सच्चा उत्साह है। फल भावना प्रधान उत्साह तो लोभ ही का एक प्रच्छन्न रूप है।

उत्साह वास्तव में कर्म और फल की मिली जुली अनुभूति है जिसकी प्रेरणा से तत्परता आती है। यदि फल दूर ही पर दिखाई पड़े, उसकी भावना के साथ ही उसका लेशमात्र भी कर्म या प्रयत्न के साथ लगाव न मालूम हो तो हमारे हाथ पाँव कभी न उठें और उस फल के साथ हमारा संयोग ही न हो। इससे कर्म ऋंखला की पहली कड़ी पकड़ते ही फल के आनंद की भी कुछ अनुभूति होने लगती है। यदि हमें यह निश्चय हो जाए की अमुक स्थान पर जाने से हमें किसी प्रिय व्यक्ति का दर्शन होगा तो उस निश्चय के प्रभाव से हमारी यात्रा भी अत्यंत प्रिय हो जाएगी। हम चल पड़ेंगे और हमारे अंगों की प्रत्येक गति में प्रफुल्लता दिखाई देगी। यही प्रफुल्लता कठिन से कठिन कर्मों के साधन में भी देखी जाती है। वे कर्म भी प्रिय हो जाते हैं और अच्छे लगने लगते हैं। जब तक पहुँचनेवाला कर्म पथ अच्छा न लगेगा तब तक केवल फल का अच्छा लगना कुछ नहीं। फल की इच्छा मात्र हृदय में रखकर जो प्रयत्न किया जाएगा वह अभावमय और आनंदशून्य होने के कारण निर्जीव सा होगा।

मान लीजिए कि एक ऊँचे पर्वत के शिखर पर विचरते हुए किसी व्यक्ति को नीचे बहुत दूर तक गई हुई सीढ़ियाँ दिखाई दें और यह मालूम हुआ कि नीचे उतरने पर सोने का ढेर मिलेगा। यदि उसमें



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

इतनी सजीवता है कि उक्त सूचना के साथ ही वह उस स्वर्ण राशि के साथ एक प्रकार के मनसिक संयोग का अनुभव करने लगा तथा उसका चित प्रफुल्ल और अंग सचेष्ट हो गए, उसे एक एक सीढ़ी स्वर्णमयी दिखाई देगी, एक एक सीढ़ी उतरने में उसे आनंद मिलता जाएगा, एक एक क्षण उसे सुख से बीतता हुआ जान पड़ेगा और वह प्रसन्नता के साथ स्वर्ण राशि तक पहुँचेगा। इस प्रकार उसके प्रयत्नकाल को भी फल प्राप्ति काल के अंतर्गतही समझना चाहिए। इसके विरुद्धा यदि उसका हृदय दुर्बल होगा और उसमें इच्छामात्र ही उत्पन्न होकर रह जाएगी; तो अभाव के बोध के कारण उसके चित में यही होगा कि कैसे झट से नीचे पहुँच जाएँ। उसे एक एक सीढ़ी उतरना बुरा मालूम होगा और आश्चर्य नहीं कि वह या तो हारकर बैठ जाए या लड़खड़ाकर मुँह के बल गिर पड़े।

फल की विशेष आसक्ति से कर्म के लाघव की वासना उत्पन्न होती है; चित में यही आता है कि कर्म बहुत कम या बहुत सरल करना पड़े और फल बहुत सा मिल जाए। श्रीकृष्ण ने कर्म मार्ग से फलासक्ति की प्रबलता हटाने का बहुत ही स्पष्ट उपदेश दिया; पर उनके समझाने पर शिवा नगीना गाना मोगा नो नो भी भारतवासी इस वासना से ग्रस्त होकर कर्म से तो उदास हो बैठे और फल के इतने पीछे पड़े कि गरमी में ब्राह्मण को एक पेठा देकर पुत्र की आशा करने लगे; चार आने रोज का अनुष्ठान कराके व्यापार में लाभ, शत्रु पर विजय, रोग से मुक्ति, धान धन्य की वृद्धि तथा और भी न जाने क्या क्या चाहने लगे। आसक्ति प्रस्तुत या उपस्थित वस्तु में ही ठीक कही जा सकती है। कर्म सामने उपस्थित रहता है। इससे आसक्ति उसी में चाहिए। फल दूर रहता है। इससे उसकी ओर कर्म का लक्ष्य काफी है। जिस आनंद से कर्म की उत्तेजना होती है और जो आनंद कर्म करते समय तक बराबर चला चलता है उसी का नाम उत्साह है।

कर्म के मार्ग पर आनंदपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अंतिम फल तक न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करनेवाले की अपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी; क्योंकि एक तो कर्म काल में उसका जो जीवन बीता वह संतोष या आनंद में बीता, उसके उपरांत फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा रहा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न कर्म के अनुसार, उसके एक एक अंग की योजना होती है। बुद्धि द्वारा पूर्ण रूप से निश्चित की हुई व्यापार परंपरा का नाम ही प्रयत्न है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैदों के यहाँ से जब तक औषधि ला लाकर रोगी को देता जाता है और इधर उधर दौड़धूप करता जाता है तब तक उसके चित में जो संतोष रहता है-प्रत्येक नए उपचार के साथ जो आनंद का उन्मेष होता रहता है-यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोता हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

केवल शोक और दुख में बँटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्मग्लानि के उस कठोर दुख से बचा रहेगा जो उसे जीवन भर यह सोच सोचकर होता कि मैंने पूरा प्रयत्न नहीं किया।

कर्म में आनंद अनुभव करनेवालों ही का नाम कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनंद भरा रहता है कि कर्तव्य को वे कर्म ही फलस्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और क्लेश का शमन करते हुए चित्त में जो उल्लास और तुष्टि होती है, वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है उसके लिए सुख तब तक के लिए रुका नहीं रहता जब तक कि फल प्राप्त न हो जाए: बल्कि उसी समय से थोड़ा थोड़ा करके मिलने लगता है, जब से वह कर्म की ओर हाथ बढ़ाता कभी कभी आनंद का मूल विषय तो कुछ और रहता है, पर उस आनंद के कारण एक ऐसी स्फूर्ति होती है जो बहुत से कार्यों की ओर हर्ष के साथ अग्रसर करती है। इसी प्रसन्नता और तत्परता को देख लोग कहते हैं कि वे काम बड़े उत्साह से किए जा रहे हैं। यदि किसी मनुष्य को बहुत सा लाभ हो जाता है या उसकी कोई बड़ी भारी कामना पूर्ण हो जाती है तो जो काम उसके सामने आते हैं उन सबको वह बड़े हर्ष और तत्परता के साथ करता है। उसके इस हर्ष और तत्परता को भी लोग उत्साह ही कहते हैं। इसी प्रकार किसी उत्तम फल या सुख प्राप्ति की आशा या निश्चय से उत्पन्न आनंद, फलोन्मुख प्रयत्नों के अतिरिक्त और दूसरे व्यापारों के साथ संलग्न होकर, उत्साह के रूप में दिखाई पड़ता है। यदि हम किसी ऐसे उद्योग में लगे हैं जिससे आगे चलकर हमें बहुत लाभ या सुख की आशा है तो हम उस उद्योग को तो उत्साह के साथ करते ही हैं, अन्य कार्यों में भी प्रायः अपना उत्साह दिखा देते हैं।

यह बात उत्साह में नहीं, अन्य मनोविकारों में बराबर पाई जाती है। यदि हम किसी बात पर क्रुद्धा बैठे हैं और इसी बीच में कोई दूसरा आकर हमसे कोई बात सीधी तरह भी पूछता है तो भी हम उसपर झुंझला उठते हैं। इस झुंझलाहट का न तो कोई निर्दिष्ट कारण होता है, न उद्देश्य। यह केवल क्रोध की स्थिति व्याघात को रोकने को किया है तो की रक्षा का प्रश्न है। इस टयंटलाइट यह बात उत्साह में नहीं, अन्य मनोविकारों में बराबर पाई जाती है। यदि हम किसी बात पर क्रुद्धा बैठे हैं और इसी बीच में कोई दूसरा आकर हमसे कोई बात सीधी तरह भी पूछता है तो भी हम उसपर झुंझला उठते हैं। इस झुंझलाहट का न तो कोई निर्दिष्ट कारण होता है, न उद्देश्य। यह केवल क्रोध की स्थिति व्याघात को रोकने की क्रिया है, क्रोध की रक्षा का प्रयत्न है। इस झुंझलाहट द्वारा हम यह प्रकट करते हैं कि हम क्रोध में हैं और क्रोध ही में रहना चाहते हैं। क्रोध को बनाए रखने के लिए हम उन बातों से भी क्रोध ही संचित करते हैं जिनसे दूसरी अवस्था में हम विपरीत भाव प्राप्त करते। इसी प्रकार यदि हमारा चित्त किसी विषय में उत्साह रहता है तो हम अन्य विषयों में भी अपना उत्साह दिखा देते हैं। यदि हमारा मन बढ़ा हुआ रहता है तो हम बहुत से काम प्रसन्नतापूर्वक करने के लिए



RENAISSANCE UNIVERSITY, INDORE

School of Computer Science

BCA/BSCCS Hindi BCA205

UNIT-II

तैयार हो जाते हैं। इसी बात का विचार करके सलाम साधक लोग हाकिमों से मुलाकात करने के पहले अर्दलियों से उनका मिजाज पूछ लिया करते हैं।